प्राचार्य का संदेश*
आदरणीय अभिभावकों, सम्मानित शिक्षकगण, प्रिय विद्यार्थियों एवं पाठकगण,

सादर अभिवादन।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय की वार्षिक पत्रिका नव पल्लव' का नवीन संस्करण प्रकाशन हेतु प्रस्तुत है। यह पत्रिका हमारे विद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता, सह-शैक्षणिक सहभागिता, नवाचारात्मक गतिविधियों एवं बहुआयामी विकासात्मक प्रयासों का प्रतिबिंब है।

शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालय केवल ज्ञान के संप्रेषण का केंद्र न होकर सीखने-सिखाने की पारस्परिक प्रक्रिया, मूल्यनिष्ठ सामाजिक दायित्वों तथा नेतृत्व कौशल के संवर्धन का मंच बन चुका है। हमारा प्रयास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा को समग्र, बहुविषयी, कौशलोन्मुखी एवं प्रौद्योगिकीय रूप से समर्थ बनाया जाए।

विद्यालय प्रशासन द्वारा क्रियान्वित शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ, शिक्षक उन्नयन कार्यक्रम (Faculty Development Initiatives),नवाचार परियोजनाएँ, एवं शिक्षा में डिजिटल इंटीग्रेशन, विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक व रचनात्मक विकास को गति प्रदान कर रहे हैं।

इस शैक्षिक सत्र में हमारे विद्यार्थियों ने अकादमिक, सांस्कृतिक, खेलकूद तथा शोधात्मक गतिविधियों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मैं इस सफलता का श्रेय सक्रिय विद्यालय प्रबंधन, प्रतिबद्ध शिक्षकों, जागरूक अभिभावकों और मेहनती विद्यार्थियों की सामूहिक सहभागिता को देता हूँ।

यह पत्रिका विद्यार्थियों को अभिव्यक्तिपरक लेखन, विश्लेषणात्मक चिंतन तथा भाषिक सृजनात्मकता को प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करती है। यह आत्मप्रेरणा,वैयक्तिक विकास और साहित्यिक अभिरुचि को समृद्ध करने का सशक्त माध्यम है।
मैं पत्रिका संपादकीय समिति, शिक्षकों, विद्यार्थियों और सहयोगी कर्मचारियों को उनके सतत परिश्रम और रचनात्मक योगदान हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

अंततः, मैं विद्यार्थियों से अपेक्षा करती हूँ कि वे शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाते हुए ज्ञान, विवेक और मानवीय मूल्यों को आत्मसात करें, तथा एक उत्तरदायी, संवेदनशील एवं नवाचारशील नागरिक के रूप में समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ।

"शिक्षा केवल प्रमाणपत्र अर्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं परिवर्तनकारी नेतृत्व का आधार है।"

सादर,

सादर,
सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन

प्रिय विद्यार्थियों, सम्माननीय शिक्षकों एवं अभिभावकों,
सप्रेम नमस्कार।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका केवल पृष्ठों का संकलन नहीं, यह उस आत्मा की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षा को जीवंत बनाती है। यह पत्रिका विद्यार्थियों के सपनों, विचारों, कल्पनाओं और उपलब्धियों की आवाज़ है — वह आवाज़ जो भविष्य के भारत की दिशा तय करेगी।

हर लेख, कविता, चित्र या रिपोर्ट में एक सपना छिपा है — कुछ नया सोचने का, कुछ अलग करने का, कुछ बेहतर बनने का । मुझे गर्व है कि हमारे विद्यालय के विद्यार्थी केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सोचने वाले, समझने वाले और बदलाव लाने वाले नागरिक बन रहे हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अंक लाना नहीं, बल्कि मनुष्य को सजग, संवेदनशील और सृजनशील बनाना है। यह पत्रिका उसी उद्देश्य की ओर एक सशक्त कदम है।

मैं विद्यालय परिवार — विशेष रूप से हमारे समर्पित शिक्षकों, कर्मठ संपादकीय टीम, और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों — को इस प्रेरणास्पद प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आप सभी इसी प्रकार सृजनशीलता, नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा के मार्ग पर अग्रसर रहें।

याद रखिए —
"आपका आज का प्रयास ही, कल का गौरव बनेगा।"

सदैव शुभकामनाओं सहित

आदरणीय प्राचार्य, शिक्षकगण, अभिभावकगण, एवं प्रिय विद्यार्थियों,

सादर अभिवादन।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन संस्थागत उपलब्धियों, नवाचारों एवं छात्र-केन्द्रित शिक्षण की संरचनात्मक झलक प्रस्तुत करता है। यह केवल एक दस्तावेज नहीं, अपितु हमारे शैक्षिक तंत्र की सृजनात्मकता, मूल्यपरक शिक्षा एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों का प्रामाणिक अभिलेख है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है। ऐसी स्थिति में, गुणवत्तापरक, समग्र (holistic) एवं कौशल-आधारित शिक्षण प्रक्रिया की स्थापना अत्यंत आवश्यक है। हमारा विद्यालय सदैव छात्रहितैषी, नवाचारोन्मुखी (innovation-oriented) तथा मूल्यमूलक (value-based) शिक्षा नीति को केंद्र में रखकर कार्यरत रहा है।

यह जानकर अत्यंत संतोष होता है कि विद्यालय प्रशासन, शैक्षिक नेतृत्व, एवं शैक्षिक समुदाय के सामूहिक प्रयासों से अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल, निर्णय क्षमता, नैतिक प्रतिबद्धता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास कर रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, भाषिक दक्षता एवं विचारशीलता को एक मंच प्राप्त हुआ है, जो रचनात्मक साहित्यिक अनुशासन को समृद्ध करता है।

मैं विद्यालय के प्रशासनिक निकाय, शिक्षकों, सहकर्मियों एवं समस्त अभिभावकों का आभार प्रकट करता हूँ, जिनके सतत सहयोग एवं सहभागिता से संस्थान निरंतर गुणवत्ता के नए प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

अंत में, मैं सभी विद्यार्थियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अनुशासित, जिज्ञासु एवं उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित हों तथा अपनी रचनात्मक ऊर्जा को राष्ट्रनिर्माण की दिशा में समर्पित करें।

"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही सशक्त समाज की आधारशिला है।"
सादर

आदरणीय प्राचार्य, शिक्षकगण, अभिभावकगण एवं प्रिय विद्यार्थिगण,

सादर अभिवादन।

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1,की वार्षिक शैक्षिक पत्रिका नव पल्लव का प्रकाशन एक बार पुनः विद्यार्थियों की रचनात्मक मेधा,शैक्षिक सृजनशीलता तथा विद्यालय की प्रगतिशील शिक्षण संस्कृति को प्रस्तुत करने हेतु उपलब्ध हो रहा है। यह पत्रिका न केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का अभिलेख है, अपितु यह विद्यालय की शिक्षा नीतिगत दिशा,समावेशी शिक्षण दृष्टिकोण,और प्रशासनिक नवाचारों का भी प्रतिबिंब है।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में, जहाँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समग्र, बहुविषयी, कौशलोन्मुख और मूल्यमूलक शिक्षा की अवधारणा को सशक्त किया जा रहा है, वहाँ विद्यालयों की भूमिका केवल पाठ्यक्रम केंद्रित शिक्षण तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि वे 21वीं सदी के जीवन कौशलों,नैतिक शिक्षा, आंतरविषयी समन्वय एवं डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम के विकास हेतु भी उत्तरदायी हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में, विद्यालय द्वारा आयोजित शैक्षिक कार्यक्रम, सहशैक्षिक प्रवृत्तियाँ ,कौशल संवर्धन कार्यक्रम,तथा ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) आधारित शिक्षण विधियाँ, विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करती हैं।

यह पत्रिका विद्यार्थियों के *सृजनात्मक लेखन, **विश्लेषणात्मक चिंतन, **भाषिक अभिव्यक्ति* और *सांस्कृतिक संवेदना* को एक मंच प्रदान करती है, जो उन्हें आत्मविश्वासी, उत्तरदायी एवं नवाचारशील नागरिक के रूप में विकसित करने में सहायक है।

मैं विद्यालय नेतृत्व, संकाय सदस्यगण, संपादकीय समिति, तकनीकी टीम एवं विद्यार्थियों को इस उत्कृष्ट कार्य हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही यह आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी विद्यालय की *शैक्षिक गुणवत्ता, **प्रशासनिक पारदर्शिता, और **समुदाय उन्मुख दृष्टिकोण* को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

"गुणवत्तापरक शिक्षा वह आधार है, जिस पर उत्तरदायी और समर्थ राष्ट्र का निर्माण होता है।"

सादर,

उप प्राचार्य का संदेश

सप्रेम नमस्कार,

विद्यालय पत्रिका "नव पल्लव" का प्रकाशन संस्थान की शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है, जो विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा, बौद्धिक दृष्टिकोण तथा अभिव्यक्ति क्षमता को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियाँ, नवाचार, विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत की जाती हैं, जिससे न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को बल मिलता है, बल्कि विद्यालय की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की भावना भी सुदृढ़ होती है।

विद्यालय एक शैक्षिक संगठन है, जिसकी समुचित प्रगति हेतु नियमित अकादमिक गतिविधियों के साथ-साथ लेखन, वाचन, प्रस्तुतीकरण, एवं सृजनशीलता जैसे गुणों का विकास आवश्यक है। "नव पल्लव" इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में एक संगठित एवं अनुशासित प्रयास है।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त संपादकीय दल, सहयोगी शिक्षकों तथा प्रतिभागी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। साथ ही, अपेक्षा करता हूँ कि भविष्य में यह पत्रिका और अधिक गुणवत्ता तथा उद्देश्यपरक सामग्री के साथ संस्थान की गरिमा को उच्चतम शिखर तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगी।

सादर,
(हस्ताक्षर)
\[नाम]
उप प्राचार्य
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1, दिल्ली कैंट

उप प्राचार्य का संदेश

आदरणीय अभिभावकों, सम्मानित सहकर्मियों तथा प्रिय विद्यार्थियों,

विद्यालय पत्रिका "नव पल्लव" का यह नवीन संस्करण हमारे शैक्षणिक संस्थान की सृजनात्मकता, नवाचार तथा बौद्धिक चेतना का प्रत्यक्ष द्योतक है। यह केवल एक प्रकाशन नहीं, अपितु शिक्षण–प्रशिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के एक सशक्त मंच का अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समग्र शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक दक्षता तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इस दिशा में सह-शैक्षिक गतिविधियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। "नव पल्लव" पत्रिका विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक एवं सृजनात्मक विकास का माध्यम बनकर उनके अंतर्निहित कौशल को प्रकट करने का कार्य कर रही है।

इस अंक में विद्यार्थियों की विविध विधाओं में रचनाएँ – जैसे कविता, कहानी, निबंध, लेख, चित्रांकन आदि प्रकाशित की गई हैं, जो उनकी अभिव्यक्ति क्षमता, भाषा-कौशल एवं विचारधारा को उजागर करती हैं। यह पत्रिका न केवल पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहन देती है, अपितु भाषा, साहित्य एवं कला के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को भी परिलक्षित करती है।

मैं इस अवसर पर सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों, मार्गदर्शक शिक्षकों तथा संपादकीय समिति को साधुवाद प्रेषित करता हूँ, जिनके सामूहिक प्रयासों से यह पत्रिका प्रकाशित हो सकी। आशा है कि यह अंक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा तथा आगामी वर्षों में उनकी रचनात्मकता को नई दिशा प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं सहित,
(हस्ताक्षर)
\[नाम]
उप प्राचार्य
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1, दिल्ली कैंट

उप प्राचार्य का संदेश
प्रिय पाठकों,
विचारों के रंगों से रचित यह पत्रिका "नव पल्लव" मेरे अंतर्मन को उस बगिया की याद दिलाती है, जहाँ हर पत्ते पर कल्पना की ओस मोतियों-सी चमकती है, और हर पुष्प से प्रतिभा की सुवास फूटती है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, अपितु उन नवांकुरों की यात्रा है, जो कलम की नोंक से फूटकर साहित्य की भूमि पर खिल उठे हैं।

शब्द जब भावना से मिलते हैं, तो कविता जन्म लेती है। और जब अनुभव विचारों से संवाद करते हैं, तो लेख, कहानी और संस्मरण का रूप लेते हैं। "नव पल्लव" इन सभी साहित्यिक विधाओं का सुन्दर संगम है — यह हमारे विद्यार्थियों के अंतरमन की झलक है, उनका स्वप्न, उनका संघर्ष और उनका उत्साह।

विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, संवेदना, संस्कार और सृजन का सागर है। इस सागर से निकलती प्रत्येक लहर एक नई दृष्टि, एक नई चेतना और एक नई उम्मीद लेकर आती है। इस पत्रिका में उन्हीं लहरों की गूंज सुनाई देती है — कभी मौन में तो कभी स्वर में।

मैं उन समस्त रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने इस अंक को अपने विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं से सुसज्जित किया है। साथ ही, संपादकीय टीम को भी हृदयतल से बधाई, जिन्होंने इस स्वप्न को आकार दिया।

चलिए, हम सभी मिलकर साहित्य के इस पर्व में सहभागी बनें और अपने भीतर की रचनात्मकता को नमन करें।

**"कलम की एक बूँद से
भावों की धारा बहे,
'नव पल्लव' की शाख पर
सपनों का पुष्प खिले।"**

स्नेहपूर्ण शुभकामनाओं सहित,
(हस्ताक्षर)
\[नाम]
उप प्राचार्य

उप प्राचार्य का संदेश

प्रिय विद्यार्थियों,
सहकर्मी शिक्षकों एवं अभिभावकों,

"नव पल्लव" विद्यालय पत्रिका का यह नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता का दर्पण है, अपितु उनके वैचारिक परिपक्वता, नवाचार और अभिव्यक्ति की क्षमता का सशक्त माध्यम भी है।

विद्यालय शिक्षा का वह उपवन है जहाँ प्रत्येक बालक-बालिका एक नव पल्लव के समान विकसित होता है। इस पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक कविता, कहानी, लेख, चित्र एवं विचार – सब उसी उर्वर भूमि के पुष्प हैं, जिनमें भावनाओं की सुगंध और कल्पनाओं की उड़ान समाहित है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल पाठ्य ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, अपितु सहशैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी ही व्यक्तित्व विकास की पूर्णता प्रदान करती है। इस दिशा में "नव पल्लव" का प्रकाशन विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान करता है, जहाँ वे स्वतंत्रता से अपने विचार अभिव्यक्त कर सकते हैं।

मैं इस सृजनात्मक प्रयास के लिए सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं संपादकीय दल को हृदय से बधाई देता हूँ। आशा है कि यह अंक सभी पाठकों को प्रेरणा, आनंद एवं ज्ञान प्रदान करेगा।

**"कल्पनाओं को दो पंख, शब्दों को दो दिशा,
बनाओ अपने विचारों को अभिव्यक्ति की भाषा।"**

शुभकामनाओं सहित,
(हस्ताक्षर)
\[नाम]
उप प्राचार्य
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1, दिल्ली कैंट

प्रिय सुधी पाठकों,
सादर वंदन।

शब्दों की उर्वरा भूमि पर उगती कल्पनाओं की कोपलें जब भावों की तप्त धूप में परिपक्व होती हैं, तब सृजन के नव अंकुर फूटते हैं — और उसी सृजन की सुरभित अभिव्यक्ति है हमारी यह पत्रिका *"नव पल्लव"*।यह मात्र एक पत्रिका नहीं, अपितु हमारे विद्यार्थियों के विचारों की उड़ान, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति और संस्कारों की छाया में पनपता हुआ एक जीवंत दस्तावेज है। "नव पल्लव" उन नवांकुरों का प्रतिनिधित्व करता है जो जिज्ञासा, चिंतन और रचनात्मकता की धारा में बहकर जीवन के विविध रंगों को स्पर्श करने का साहस रखते हैं।इस अंक में सृजन की गूंज है — कभी कोमल कविताओं में, कभी विचारोत्तेजक लेखों में, तो कभी मौन चित्रों की भाषा में। हर पृष्ठ पर विद्यालय की आत्मा की प्रतिध्वनि है, हर शब्द में विद्यार्थी के हृदय की धड़कन।एक रचनाकार के लिए लेखनी जितनी महत्त्वपूर्ण होती है, एक संपादक के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है उस लेखनी को दिशा देना। इस यात्रा में साथ देने वाले मेरे सहकर्मी शिक्षकगण, विद्यालय की प्रधानाचार्या महोदया, तकनीकी सहयोगी तथा विद्यार्थियों को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ।"नव पल्लव" केवल पढ़ा नहीं जाता — इसे अनुभूत किया जाता है, इसे आत्मसात किया जाता है। आशा है, यह अंक आपकी चेतना में सृजन की एक नई हलचल भर सकेगा।
साहित्य की इस स्नेहगंध यात्रा में आपका स्वागत है।
सादर
मनीषा जैन
पीजीटी (हिंदी)
मुख्य संपादक
नव पल्लव" –

Unseen Battles, Unheard Cries

She burned the night to chase the day,
While pain and fever blocked her way.
Dengue struck mid-year and stayed,
But she stood strong, never swayed.

Boards arrived with a heavier test,
Typhoid waged her inside her chest.
Still she held that pen with grace,
With tired hand, she found her place.

No soft bed ou peaceful room, Just quiet stairs beneath the gloom. She and her mother, side by side, Sharing gobreams they could not hide.

It wasn't just her silent fight Her mother dreamed that bright light. To see her child one day be known, A face the world would call cits own.

No spotlight came, mo wall of fame, Yet she had played the bravest game. They missed the war behind her eyes, The sleepless night, the muffled cries.

But codeep within, she knew her worth, Not measured by capplause or mirth For in her hearts, the stars still gleam-A girl who lived her mother's dream

-S. Saikrishna
11 A

Still, I Walked
(A monsoon journey)

The road was flooded, puddles wide and deep,
Cars honked and crawled, like a city in sleep.
Water all around, chaos in air,
yet my feet move forward - I didn't care

Splashes hit me, the sky poured loud,
But my dreams weren't hidden behind the cloud.
Soaked were my clothes, and shoes gave in,
But the fire cinside kept me strong within

Some turned back, some stood in fright,
But I had a destination burning bright.
The rain said, "Stop! Not today,
I replied, " move i'll find my way."

Engines groaned, traffic lights blinked,
But my heart race forward, never once shrank.
The water rose, the road stood still,
Yet I climbed with undying will.

Every obstacle became a test,
But my spirit refused to rest.
And at last, through stroms and delay,
I reached where I was meant to stay.

Because when the rain is drowned in rain,
It's courage that sails through pain.
So walk on-even if the skies roar....
You are the path, you are the shore.

-S. Saikrishna
11 A

Not Just One Test
-A mother's quiet lesson

She looked her daughter's worried face,
A strom of silence, dreams misplaced.
The race she ran with all her fire,
yet fell just short for her heart's desire.

Softly the mother spoke, not loud,
Like sunlight breaking through a cloud:
"Listen, dear, to a story old-
Not in gold, but courage told...

Two boys once stood where you do now,
one with cease, one with a furrowed brow.
The first boy climbed the ranking tree,
But life, you see, is more than a marquee.

The second walked with a twisted stride
But held a fire she never let hide.
He read by lamps when other slept
And wrote in lines where effort crept.

On the day when scores were shown,
He stood quiet, completely alone.
No medals gleamed upon his chest,
Yet one honor made him stand above the rest.

A small line in the corner lay
"Distinction In English to it did say.
Few noticed, but his mother knew,
That silent strength the world once threw.

years later, he did not boast,
but taught young minds along the coast
A professor now, with wisdom wide,
The would had seen the gold inside.

You see, my love," the mother smiled,
Not every men is ranked or styled.
You gave your best- that's what remains.
Through sun and strom, through loss and gains.

Keep walking strong, the road is long,
Your story too will turn to song.
It's not just one test that makes the way-
It's how you rise, day after day?"

-S. Saikrishna
11 A

Bent, But Still Blooming

A Fragile bloom sways in the breeze,
Caught between the storm and trees.
Petals bright with dreams so bold,
Yet weighed by whispers, harsh and cold.

“Study more”, the parents sigh,
“Lift your grades and reach the sky.”
Teachers nod with measured grace
"First in class-that is your place"

Yet in heart, the flower yearns,
for melodies and colours bright,
for laughter free, for dance, for light.
But wots are tugged, the stem fells tight

A pull of books, a push of scores
A life confined by rigid doors.
Oh, dancing flower, don't loose your glow.
Though burdens bend you, swaying low.

One day the wind may shift a new,
And lift the chains press on you
Till then, Just dance - though no one sees,
A bloom that bonds but won't break free.

-Anushka Kumari
11-A

SCHOOL PICNIC ADVENTURE:
NATIONAL ZOOLOGICAL PARK &
NATIONAL SCIENCE CENTER

One day school trip I am Aradhya, our class is going to trip to National zoological Park and National Science Center. On 29th January 2025 for one day. We came school tomorrow. Then we came to NCC Ground

We set off from school in a bus, singing songs, eating snacks and talking to each other, having fun a lot during the journey.

When we arrived at the zoo, teacher bought tickets at the zoo and entered zoo. We saw duck, deer, monkey, peacock, tiger, elephant, ostrich etc. We also took pictures with my classmates and teachers then we went to canteen, we ate many things like Ice-cream, Milk Shakes, Samosa, Sandwich, Banana, etc.

Then we headed to Science Center teachers bought tickets at Science Center then we entered the center we saw Statues of Harappan Civilization also skeletons we saw this on 2nd floor then Went to 3rd floor we saw small versions of Taj mahal, Qutab Minar, Sholapith. Then went to fun Science gallery inside national Science center we entered to mirror room and freeze your Shadow room. Then to 3D Show of Jungle. Then entered the cave of dinosaurs it was very dark then we all came out of the center.

At out side we saw many key chains and many more things at outside.
We all buy some Keychains.

This trip was Memorable We all have fun then we came back to School and our parents took us to home!

-Arradhya
7-E

FRIEND IN THE FACE OF FEAR

Once Upon a time there were group of 5 friends all of them were were above 20 years, Simran, simriti, Nitish, Advik and Jay among all of then Jay was older he was 25 ald. All of them were so close to each other, they all love to traelle. They thought for trip again but it was because of that a scary place. some of there paremts were not allowing them to go for the trip but Jay convinced them. They all went to "Khooni Darwaza" This is a historical gate in delhi is also know as "Bloody gate" and is said to be haunted by the screams.They all wanted to explore it so they started there trip frome M.P to Delhi, at starting it was so fun but after some time they they heared some werid sound reached the place they they thought that it must be an animal, they start to explore, after some time simran said "Let's take break" they all near rocks they were drinking. Avik said let me find any different animal if possible" Jay said" Come back soon." Avik said "Ok" Nitesh asked " Do I have to come" Avik said "No bro I will manage".... After some time all of them were waiting for Avik it was more than 20 min they call him on his phone but there was no network. So they called him aloud but didn't response. Sot hey start to find him they shouted "Avik where are you" on the way they saw the same blood drops they were scared but they had to find there friend so start to walk, they saw cave they were scared but still they enter to find there friend after few steps they saw a man in black dress and he was whispering some thing and they saw there friend but he was not in his own controll then they realise that man in black dress is a black magician, when magician saw them he made avik to fight with them but they try their best to safe him, they got lot of injury but they safe avik from magician....

True friends stay with us when we need them.

“Our Brave Hearts: The Unsung Heares"

"Whenever we think about an Army person, our mind often conjure an image: a brave individual in an olive green uniform and cap, ready to "who possesses a brave heart, ready to sacrifice…” In previous times, only men were typically allowed or showed interest... in joining the army, but in the past few years, women have also been welcomed into the forces with the same honour, respect and prestige. This change reflects not only a shift in the country's mindsetl but also its overall development. Recently "Operation Sindoor" was conducted by our Indian Armed forces. Notably, it was primarily led by two women officers-Mrs. Sofiya Qureshi and Mrs. Vyomika singh. Operation sindoor conveyed. a profound message, not only to the terrorists involved in attack in Phalgam but also to the entire world. Through Mrs. Sofiya Quereshi, we can see that the exemplary mindset of an army person, irrespective of their religion. She served our country diligently, succeeded in her goals, and made everyone proud.

Mrs Vyomika Singh hailing from Haryana, challenged the stereotype some people hold about the perception regarding the female sex ratio. Through her achievements, she proved the immense potential of women. As has been proven time and again, the potential of a women is not confined to the boundaries of her home. If she desires, the posseses the capability to lead an entire nation and achieve remarkable success in any field she chooses. This sprit of courage. and determination is particularly evident in those who aspire" to serve all young individuals, both girls and boys, who are interested in joining the Indian armed forces, should draw inspiration from the diverse backgrounds of our soldiers Despite coming from different surroundings, they unite with a common purpose, coming together to make our country proud indeed, "The spirit of a soldier is a blend of selfless duty and profound strength".

Jai Hind
-Riya
11-A

Dear MAA,

I'm so happy that I have such an incredible and strong mother like you. You've taught me kindness, self confidence and to always believe in myself. These lessons have crafted and molded me into the person I am today and the person I am becoming. I am sorry for the times I may have made you worry, but thank you for never turning your back on me. What you have gone through to raise me is beyond what I will ever know. How can someone have such a big heart?

Thank you for what you have done and continue to do. I love you. Repeat after me, I love you MAA.

-AASHISH RANJAN
12-A

Pollution

Pollution means making our environment dirty and harmful. It happens when bad things like smoke, garbage or chemicals get into the air, water and land, pollution is a big problem for people, animals or nature.

There are four types of pollution :- Air pollution, water pollutior soil pollution and noise pollution. Air pollution comes from gas, factories and burning things like Coal. Water pollution happens when dirty water comes from homes, factories, farms goes into the rivers and Oeoans. This can kill fish. Noise pollution comes from loud sound like traffic, airplanes, machines. Pollution is harmful in many ways. It can make people sick, hurts animals and damages the Earth. But we can help throwing garbage in the right and keeping our enviroment clean. To keep our a world clean, we should recycle, use less plastic, and plant more tress. By working together we can reduce pollution and create a healthier environment. Teaching friends and family about the importance of reducing pollution is also essential, every small action action, Like using reusable bags, can make a big difference in keeping our world clean and safe. Our planet faces today a hard thing to solve it is pollution in air, land and water. It has now become a great problem that our life is threatened. Air is the most polluted of all. To our city life, we have little open space where we can play have fresh air.

-Vaishnavi
7-E

A Snowy Dream

The soft white snow,
falling from the sky onto my head....
These are the things I want,
when I'm daydreaming in my bed.

When I wake up in the morning,
and outside I see snow,
I'll take some in my hands and go inside,
for my little brother to show..

The warm blanket,
Like a warm cookie tray,
The warm pillow, resting my head,
like a stack of hay.

The soft white snow,
And the smoky, white icicles,
the little droplets of dew.
And I like to watch them, as they twinkle.

Me, sitting on my bed,
staring and gazing at my socks tied with bows.
but I ain't gonna lie, I seriously crave potatoes.

-Nediva Singh
8-B

FRIENDSHIP

There are many valuable things in life ,but friendship may be one of the most important among all.

To live without the experience of friendship is life without living. Human interaction is a necessity of survival, but developed friendship are an essential to the success well being of anyone. Based upon the American Heritage Dictionary, the definition of a friend is a person whom one knows, likes and trusts. But to all , friendship has no definite terminology.

The definition of a friend, and friendship, is based upon one's own notions. Many people look for different characteristics in friends, things that may be common in nature. There are many different types of friends that a person needs or wants. There are five different categories for these friends.

It is best in nature to recognise and appreciate various kinds of friends. The first type of friend in friendship latter, is an acquaintance. This is the beginning to all basics, and deeper friendships. This is the person with whom, we only known on a pure.

The second type of friend is the soul mate. The name given to someone who is considered to be ultimate, true and eternal half of the other's soul. The third type of friend is the pen pal. They may or may not have met each other and may share either friendship or simply an acquaintance between each other.

The fourth type of friend is spiritual friend who is a friend with a common interest, through they have more knowledge and experience that other. The Fifth friend is fervency. Someone who tends to be a friend but actually is an enemy. So, one have to be careful while choosing a fateful friend.

Name: Samrudh
Class: 11th D

Reserved or Deserved?

We proudly call ourselves the world's largest democracy and 3rd largest economy by 2028. Yet we remain trapped in caste-based recommation divisions from centuries ago. Reservation was meant for historical injustice, to uplift Adivasis, Dalits and backward classes classes denied educations and basis human rights for generations. That injustice was so real I have huge sympathy towards them and the constitution rightly gave SC/ST a chance. But 75 year's laser, are we still justifying quota for those enjoying every modern luxury?

we call hereditary monarchy unfair, but defend Where one can inherit reservation benefits across generations, even if no longer economically on Socially deprived. Is this social justice, or reverse dynasty? Reservation today is less about justice and more about politics. Parties hesitate to even touch the topic, fearing backlash. If the system truly aimed at upliftment, why no action against its misuse?

Thankfully, the Supreme cousit with 6:1 majority ruled that States can apply creamy layer filters among scs/Sts. Definetly, a landmark step but Judiciary can't enforce it alone. Politicians (legislative) are on the driver's Seat, only they can accept and set up economic criteria for its full implementation and guess what? They - won't show courage because vote bank > Fairness.
I'm not against reservation, I'm against it's blind continuation without economic logic. The poor from any caste need support, but the rich among them don't.
You can't fight inequality by reversing it. The real enemy is corruption, politics, and deep poverty, not caste.

-Prattya Amrit
12-D

Beyond the Headlines

India has often seen harsh critiques of its economy, governance, infrastructure, or society. Some are valid but a more powerful truth is : India is developing slowly, surely and irreversibly.
We are a country of contradictions, billion dollars start ups and jobless youth. A digital revolution coexists with water shortages and traffic jams. Much less has been said about India's secondary sector being "weak". To some extent, I agree but not with the belief that we're "not growing" or "incapable of manufacturing". People often label our secondary sector primitive but you can't ignore the fact that it still contributes nearly 25% of our GDP, with a growth rate of 4-5% every year. That's a respectable pace. We are not failing but we aren't excellencing either. India is the 5th largest secondary sector economy in the world. Yet the pace of improvement hasn't match our population, job needs or global ambitions like rivalling China.($19.4 trillion Economy)
Criticism is easy. Development isn't. And the hardest part? waiting. Patience means trusting the process and having true belief that the government is working. We can't undo 200 years of colonial damage, 70 years of complex policies and millions of lives in poverty with just slogans or GDP numbers. Real change takes generation. Yet we are closer than ever. Yes, we have cast issues economic gaps and communal tensions but so does every great Nation, in some form.
The difference lies in how we choose to heal and move forward. Lett us not just dream of a great India but have the patients to shape it.

- Prattya Amrit
12-D

Childhood

Childhood is fun and enjoyment for child
It is the time when you don't know.
About the world
When nobody knows outside about your Future
Time when you have to be ready for the
Challenges of the world
When you will be ready for it You will be on top of the world
Childhood is not rarely fun
It is the first step of learning

-C.S Aradhya
7-E

BE A RESPONSIBLE CITIZEN OF INDIA

Say goodbye to plastic,
Plant more trees,
Save fuel drive less,
Make pollution free India
Encourage solar power
Switch over to CFL and LED bulb
Do not throw garbage in drainage
Do not spit everywhere.
Obey traffic rules,
Save water for future
Be sustainable and responsible.

-C Poornima Lakshmi
9-C

IMPORTANCE OF WATER

Since the beginning of time, water has continue to be important to all living things. Without water no one can survive. We may change or food according to the climate of a place what we can find no substitute for water. Man has always look for pure fresh water to gratify his thirst.

Water not only quaches a thirst but it also a source of food for us. from the sea we catch large quantities of fish and others creatures. we use water to irrigate our lands to produce crops. Many parts of world are dry and Barren because they are no water. People is such places lead a very hard life. Even the plants and animals find it a real struggle to survive. They can obtain water from some mean of ingenuity. Water also helps in increase the fertility of land in several parts of the world. The alluvium that is brought down by river is very fertile. Even electricity, which has changed our lives completely, is produced by water power in many countries.

Further, water is an important mean of communication. We use water waste to carry out goods or trades. water transport is cheaper than land transport and in many remote regions, rivers are the only means of communication. in many countries river are used to bring down Timber from the hilly reaches to the lower regions where there are Timber mills. In this way much money is save.

It is true; however, that water has also cause much distraction to life and property through out human history. Heavy rainfall, Swollen rivers and the angry waves of the sea has killed thousands of people and destroyed homes and crops. Yet, water is indispensable to life, the people everywhere are trying their best to bring water to place where it is scarce, to control its flow in times of floods and to make great use of it.

Thank You

Name: Samrudh
Class: 11th D

बरसात

प्रिय याद तुम्हारी आती है, झर झर झरती बरसातों में।
मन और विकल हो जाता है, सुधियाँ समेट कर रातों में।
जब हेम कलश झलका करते, कजरारी घोर घटाओं से।
व्याकुल होता अनुरागी मन, पावस मंदिर की छटाओं से।
घूंघट ओढ़ पनिहारिन, काली नालाम बदरिया का।
कुछ स्वर्ण बिया देती बिखेर, दामिनपट हटा चुनरिया का।
अनुरक्ति और भी बढ़ जाती, अंबर की इन सौगातों में।
प्रिय याद तुम्हारी आती है, झर झर झरती बरसातों में ।
अर्गला कोई खटका देता, चुपके से हृदय कपाटों की।
चमकीली आँखें हो जाती, प्यासे पनघट के पाटों की।
उठती एक हक कलेजे में, चिर परिचित मौन निमंत्रण से।
झंकृत हो जाते तार-तार, रिम झिम बूँदों के नरतन से।
उत्सहा जगा देती पछुआ, वीणा के पक्षाघातों में।
प्रिय याद तुम्हारी आती है, झर झर झरती बरसातों में ।

जब व्योम वीथि में, इन्द्र धनुष सतरंगी मेले भरते।
मन सिंचित होता अवनिगात, वृषाकुलित मृग से फिरते।
अविरल आँसू बरसाता है, मेरी आँखों का चौमासा।
प्राण पपीहा स्वॉती बिना, अतृप्ति लिए अब तक प्यासा।
चातक का विश्वास ना तोड़ो, जो टिका पुरातन नातों में।
प्रिय याद तुम्हारी आती है, झर झर झरती बरसातों में ।

-खुशी यादव
बारहवीं ब

सावन

रिमझिम-रिमझिम,
करता देख
हरा - भरा है।
सावन आया।

हरी-भरी है वेशभूषा,
तीज का त्यौहार लाया
दूब देखो -भरी रही।
कली देखो खिल रही।

गढ़ढे वर्षा से बन रहे,
कूदे बिना हम ना रहे।
पकोड़ देखो तल रहे है,
तेल से नहा कर निकल रहे हैं।

भुट्टा देखो भुनने को कैसा,
तरस रहा देखो पले रहे है
देखो वारि से निकल रहे हैं।

बचके रहो तुम,
मच्छर से बचाव करो तुम् ।
वर्षा का आनंद लेते रहो
छत पर जा कर स्नान करते रहो।

-काव्या
6-C

भारत कोकिला - सरोजिनी नायडू

कविता ऐसी लिखी की शब्दों में आ गई जान,
अपनी कविताओं के कारण वह बन गई महान ।
बापू ने भी दी उपाधि कोकिला के नाम,
ऐसी महान कवियत्री को दिल से सलाम ।

जन्म हुआ सन् 78 में बंगाल के एक क्षेत्र में,
कोई अलग ही नई उमंग की किरण थी,
इस बालिका के नेत्र में।

इनकी कविताओं में बच्चों का बचपन था झलकता,
दिल उनका सूरज और चेहरा चाँद सा चमकता।
अपनी उस महान सोच से,
जीवन में पाई उन्होंने खूब सी सफलता ।

किये उन्होंने जीवन में बहुत से काम,
मिला उन्हें जिससे प्यार और सम्मान ।
नहीं उन्होंने किया कभी घमंड अपने नाम,
लाई किंतु कई लोगों के चेहरों में मुस्कान ।

जागी रूची सीखने की उनमें अंग्रजी भाषा,
परंतु उनके पिता ने बचपन में
पूर्ण न होने की उनकी ये अभिलाषा ।
लेकिन अभी भी उनकी आँखों में थी अंग्रजी में रचने की आशा।
उन्होंने अपनाई सदैव अहिंसा,
पड़ जाएँ शब्द ही कम करने को इनकी प्रशंसा ।

मद्रास में की उसने पूरी अपनी पढ़ाई,
लिया उन्होंने हिस्सा जब थी भारत की लड़ाई।
कई बार इसी दौरान जेल रात्रा में वह शामिल हुई,
विद्या की नदियाँ जैसे उसके अंदर थी समाई।
अच्छे बहुत से काम किये जिससे हो लोगों की भलाई।

बनाए रखा उन्होंने सदैव प्रेम, शांति और अमन,
ऐसी महान कवियित्री को कोटि-कोटि नमन ।

-वैष्णवी सचान
11-D

संस्कृतभाषायाः महत्वं

संस्कृतभाषाया संसारस्य प्राचीनतमासु भाषासु एका भाषा अस्ति । एतां भाषां 'देवभाषा' 'देववाणी' 'सुखाणी' गीर्वाणवाणी' शब्दैः अपिवयं सर्वे व्यवहरामः भाषायाम अस्याम् अलौकिकाः गुणाः सन्ति । अत एव एषा देवभाषा उच्यते । कामं संस्कृतभाषा संसारस्य सर्वासां भाषाणां जननी नास्ति, परम् एषा अनेकासां भाषाणां परियोविका अवश्यम् अस्ति । भारतीयानां भाषाणां तु संस्कृतभाषा जन्मदात्री एव। यहापि संस्कृतभाषां वय व्यावहारिकी भाषां कथयितुं तु न शक्नुमः, परं एतस्यां भाषायां यादृशं महत्तवपूर्ण साहित्यं वर्तते, नास्ति तादृशं संसारस्य कस्यामपि भाषायाम् । मानवजीवनस्य दर्शनम्, इतिहासः पुराणानि, वैद्यक, ज्यौतिषम् ललितकला - साहित्यं च संस्कृतभाषायामेव अस्ति । विस्तृतं साहिस्तय संस्कृतभाषायाम् अस्ति । अस्याः भाषायाः अध्ययनं कृत्वा एवं मानवः विद्वान् भवितुमर्हति । वेदान्, उपनिषदः, रामायण, महाभारत, लीलावतीं, चरकसु श्रुतग्रन्थात च पठित्वा पाश्चात्वाः विद्वांसः सहर्ष संस्कृतभाषायाः गौरवं स्वीकुर्वन्ति । महाकाव्येषु कालिदासस्य रघुवंशम्, भारतेः किरातार्जुनीय, श्रीहर्षस्य नैषधीयचरितम् नाटकेषु कालिदास्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् भवभूतेः उत्तररामचरितम्, श्रीहर्षस्य नागनन्दम् इत्यादयो ग्रन्थाः सर्वस्मिन् संसारे प्रख्याताः सन्ति ।

एवं संस्कृतभाषायाः महत्वम् न केवलं भारते एव विद्यते, अपितु सर्वस्मिन् संसारे एव ।

-वैष्णवी सचान

11-D

प्रेरणादायक लेख

सपने और संकल्प

हममें से हर किसी के दिल मे एक सपना होता है-एक चिंगारी, जो बस जलने का इंतजार कर रही होती है। कोई वैज्ञानिक बनने का सपना देखता है, कोई कलाकार, डॉक्टर, शिक्षक या समाज में बदलाव लाने वाला । लोकेन सपना चाहे जो भी हो, एक बात हमेशा सच होती है : सपनों को साकार करने के लिए संकल्प और मेहनत जरूरी होती है। बिना प्रयास के सपना उस बीज की तरह है जिसे पानी नहीं मिला हो। उसमे संभावना तो होती हैं, पर शक्ति नहीं। जब हम अपने सपनों को कड़ी मेहनत, फोकस और धैर्य से जोड़ते है, तो असंभव भी संभव लगने लगता है। इतिहास ऐसे लोगो से भरा है, जिन्होंने केवल एक सपने से शुरुआत की- एपीजे अब्दुल कलाम, कल्पना चावला, सचिन तेंदुलकर । उन्होने असफलताएं देखी, संघर्ष किया और संदेह का सामना किया, लेकिन कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपने आपने पर विश्वास किया, भले ही शुरुआत में किसी और न किया ।

- दृष्टि वर्मा
9-E

शीर्षक - " पेड़ की कथा"

लो गरमी की छुट्टी आई
हम बच्चे अब छोड़े पढ़ाई।
चलो पेड़ पर झूला डाले
खूब करेंगे खेल कूदाई
सुबह-सुबह जब आँख खुली तो
पेड़ पर चिड़िया चहकाई
पेड़ के नीचे, दादा जी ने
पेड़ के बारे में है बनाई।
पेड़ चिड़ियो का घर है भाई
प्रकृति भी है इससे हरसाई।
कभी न करना इसकी कटाई
फल फूल है हमें ख़िलाते
गार्मी से हम सब को बचाते

लेखक -: शगुन

मेरे सपनों का भारत
जहाँ न भ्रष्टाचार का वास,
जहाँ न मंहगाई का निवास,
जहाँ न हो हिंसा की आस,
जहाँ न आतंकवाद हो पास,
सपनों का ये भारत मेरा,
सच में होता काश!
जहाँ धर्म- धर्म की न ही लडाई,
भिड़ते जहाँ न भाई - भाई,
न हिंसा न त्राहि-त्राहि,
सपनों का भारत में मेरे, ऐसी सुबह थी आई।
मानवता ही जहाँ सभी सत्कर्म,
समझतें एक-दूसरे का मर्म,
जहाँ न होता कोई अधर्म,
काश! मेरे देश मे होता रिसा मानव धर्म ।
जीवन मूल्य जहाँ न गिरते,
ऊंच-नीच के दाँव न चलते
कदम मिलाकर सब जन चलते
पलको मे मेरी, भारत के ऐसे ख़्वाब है पलते।

–सी पूर्णीमा लक्ष्मी
9-C

कविता

सपनों की उड़ान

छोटे से दिल में पलते हैं अरमान,
हर कोने में बसी एक नई पहचान।
रोशनी की किरण हो या अंधेरा घना,
उम्मीद ने कभी साथ छोड़ा ना।

चल पड़े हैं पद पर विश्वास लिए,
हर गिरावट में भी कुछ आप लिए।
सपनों के पीछे भागे नहीं हम,
उन्हें अपने साथ चलाए हरदम।

हवाओं से बातें सितारों से खेल,
मन के अंदर जेल उम्मीद के तेल,
यह जीवन है संघर्षों की शान,
चलो उड़ चले लेकर सपनों की उड़ान।

–अंश कुमार
6-B

अपने भीतर की शक्ति को पहचानें

हर व्यक्ति की जीवन यात्रा में चुनौतियाँ और संघर्ष आते हैं। लेकिन है। लेकिन यही चुनौतियां हो, मजबूत बनाती है - हमे बेहतर विचारको, बेहतर कर्मियों बेहतर इंसानों में बदल देती हैं। अपने भीतर छिपी उस असीम शक्ति को पहचानना और उसे जगाना ही जीवन की सबसे बड़ी जीत हैं।

जब हम किसी नए काम की शुरुआत करते है, तो डर और असमंजस छांव की तरह साथ रहता है। यह स्वाभाविक है, क्योंकी मन ने अभी तक उस काम में खुद को ठहराया नहीं होता। पर यही डर है, क्योंकि चेतावनी देता है "अब तुम्हें आगे बढना है" यदि हम डर के आगे खुद को हारा हुआ मान ले, तो हम अपनी संभावनाओं को ही नकार देते हैं। इसलिए डर की चुनौती समझकर आगे बढ़ना ही असली सफलता की पहली सीढ़ी है ।
मेहनत और धैर्य- दोनो हमारे किरदार को संवारते हैं। जैसा की एक किसान बीज होता है और कई दिनों तक पौधे की वृद्धि का इंतजार करता है ऐसे ही हमें भी अपने सपनों के विकास के लिए धैर्य रखना चाहिए। बिना मेहनत के सफलता की कल्पना निराशा की माला है। मेहनत से ही हमारी क्षमताएं निकलते हैं, आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और जीवन की राह आसान होती है।

असफलता – को हम ना हार मानकर एक मार्गदर्शक माने।गलती और असफलता हमें यह सिखाती है कि अगले प्रयास में क्या बेहतर किया जा सकता है यह हमारी रक्षा नहीं बल्कि हमारी उन्नति की दिशा का प्रकाश है।

सकारात्मक सोच और आत्म प्रेरणा – जीवन की गति बनाए रखने का अहम हिस्सा है जब मन कहता है "मैं नहीं कर सकता" तब सकारात्मक दृष्टिकोण हमें कहे "मैं जरूर कर सकता हूं" यही भावना हमें निरंतर आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। अंत में आपका खुद पर भरोसा आपकी सबसे बड़ी ताकत है जब आप अपने बारे में सोचते हैं कि "मुझे कर सकता हूं" तो आपकी सोच ही रास्ता बन जाती है आत्मविश्वास वह ईंधन है जो आपके लक्ष्य को गति देता है।

उपसंहार – अपने भीतर की शक्ति पर विश्वास करें। दर को चुनौती बना, धैर्य और मेहनत से सशक्त हो। असफलताओं से सीखे, सकारात्मक रहे और खुद में आत्मविश्वास जगाएं। यह यात्रा आसान नहीं है लेकिन इससे आपकी हर कोशिश सार्थक होगी क्योंकि जब आप सचमुच खुद पर भरोसा कर लेते हैं तो राह पर चले गए आप जरूर जीत आपकी होगी।

– जिवितेश
8 - E

पहेलियाँ

- ऐसा एक अनोखा पक्षी,
  ना हाड़, ना माँस।
  हजार मील वो उड़ता जाये,
  कभी ना लेता साँस।।
  उत्तर – हवाई जहाज

- तीन अक्षर का मेरा नाम,
  पहला कटे तो राम,
  दूजा कटे तो फल का नाम,
  तीजा कटे तो करूँ काटने का काम।
  बताओ क्या है मेरा नाम?
  उत्तर – आराम

- बीमार नहीं रहती मैं, फिर भी खाती हूँ गोली
  बच्चे बूढ़े सब डर जाते, सुनकर मेरी बोली
  उत्तर –बंदूक

- दिन में सोये
  रात में रोये जितना रोये उतना खोये
  उत्तर –मोमबत्ती

नाम - अविका वर्मा

कक्षा – आठवीं ई

नाम - काजलयादव

कक्षा - आठवीं ' अ'

सुविचार

विपत्तिकेसमयजोहमारेकामआताहैवहीह
मारासच्चादोस्तहोताहै ।

पेड़की समस्या

पेड़ काट रहे है लोग,

पता नहीं क्या कर रहे भोग,

पेड़ हमें देता है खाना,

हम बना रहे उसे काटने का बहाना,

पेड़ हमें देता है हवा,

हम उसे कर रहे है जिंदगी से दफा,

पेड़ के बिना हमारा जीवन है अधूरा,

पेड़-पौधों के साथ ये बनेगा पूरा।

सम्बोध कुमार साहू

कक्षा: नवीं

विभाग - इ

शूरवीर बच्चे

भारत में महान लोग कितने जन्में है,

महान - महान लोग कुछ सिखा कर गए हैं,

हमें भारत की स्वतंत्रताको बनाए रखना है,

चाहे अपना सर्वस्व कुर्बान क्यों ना करना पड़े |

हम उन शूरवीरों को याद करते हैं,

जिन्होंने अपना तन -मन -धन सब कुछ कुर्बान कर दिया,

और स्वतंत्रता जैसा मूल्यवान उपहार दिया,

पता नहीं कितने शूरवीर इस भारत में जन्मे है।

जाने क्या-क्या कर दिखा दिया है उन्होंने,

ना अपनी जान की परवाह ना अपने परिवार की परवाह,

सिर्फ भारत माता की परवाह वह सभी करते,

भारत माता के वे प्यारे बच्चे थे।

सागर में डॉ० भीमराव अंबेडकर

भारत का संविधान लिख डाला,

भेदभाव से लोगों को बचाया,

सागर में था वह एक।

शिक्षा जीवन का

आधार है,

इसके बिना जीना

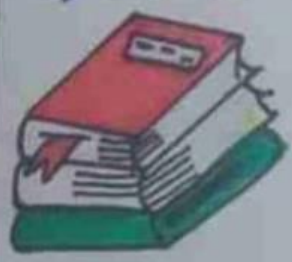

बेकार है।

शिक्षा का जीवन में

महत्वपूर्ण योगदान

प्राप्त हो जीवन में

उचित स्थान।

कनिका सिंह
आठवीं इ

मैं जानती हूँ एक दिन ऐसा आएगा

मैं जानती हूँ एक दिन ऐसा आएगा,

जब भारत सर्वश्रेष्ठ कहलाएगा।

आसमान को पार कर चाँद पर जाएगा,

मंगल ग्रह पर फिर जाकर सफलता पाएगा,

जो कोई न कर सका वो करके दिखलाएगा,

हर समस्या को उन्मुक्त तरीके से सुलझाएगा।

मैं जानती हूँ एक दिन ऐसा आएगा,

जब भारत सर्वश्रेष्ठ कहलाएगा।

गंदगी को दूर भगाकर स्वच्छता को अपनाएगा,

पेड़- पौधे लगाकर प्रदूषण दूर भगाएगा,

जल ही जीवन है एक दिन सबको समझ आएगा,

पशु - पक्षी की रक्षा करके उनका जीवन बचाएगा।

मैं जानती हूँ एक दिन ऐसा आएगा

जब भारत सर्वश्रेष्ठ कहलाएगा।

हर काम मे उन्नति का प्रकाश फैलाएगा,

सोने की चिड़िया फिर से कहलाएगा,

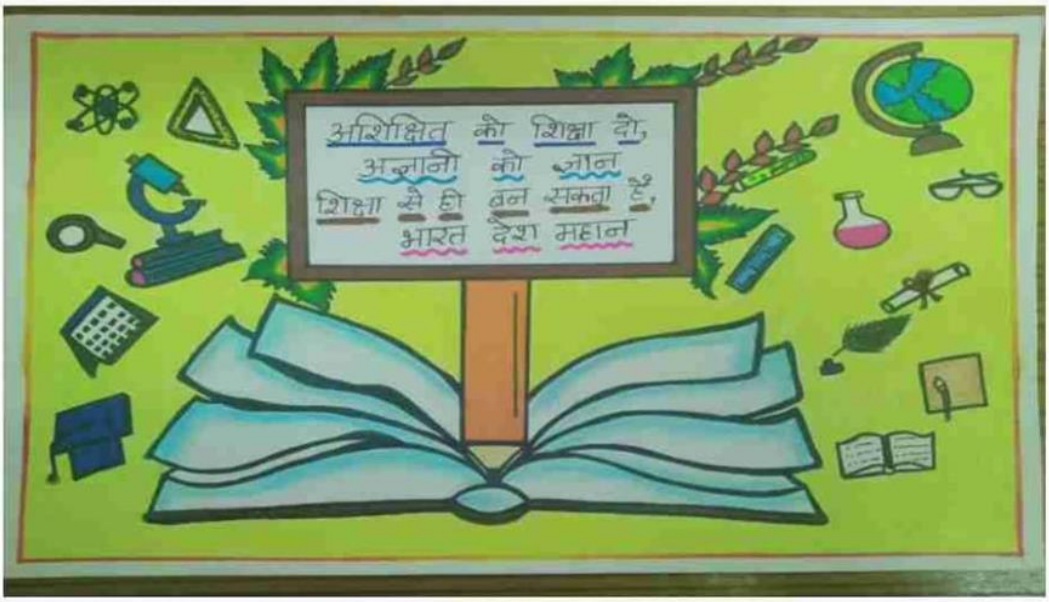
अशिक्षित को शिक्षा दो,
अज्ञानी को ज्ञान
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान

अशिक्षित को शिक्षा दो,
अज्ञानी को ज्ञान
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान।
नाम - डॉगिता
कक्षा - आठवी 'ई'
अनुक्रमांक - सात (7)

नारी सशक्तिकरण

नारी
समानता का अधिकार
लैंगिक समानता
हैप्पी लाइन नम्बर
जीवन की कला को अपने हाथों से सजाकर कर नारी ने संस्कृति का रूप निखारा है, नारी का अस्तित्व ही सुंदर जीवन का आधार है।
"जब है नारी से शक्ति सारी, तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी।"
स्त्री का जीवन

ज़िंदगी की कीमत

एक बार मैंने अपने पिता से पूछा,पापामेरी ज़िंदगी की क्या कीमत है। तभी पापा ने कहा; - अगर तुम सच में अपनी जिंदगी की कीमत समझना चाहती हो तो मैं तुम्हें एक पत्थर देता हूँ। इस पत्थर को लेकर बाजार में चली जाना और अगर कोई इसकी कीमतपूछे तो कुछ मत कहना। बस अपनी दो अँगुली खड़ी कर देना । मैं बाजार गई कुछ देर तो वहाँ ऐसे ही बैठी रही लेकिन कुछ देर बाद एक बूढ़ी औरत मेरे पास आकर उस पत्थर की कीमत पूछने लगी। मैं एकदम चुप रही। मैंने कुछ नहीं कहा और अपनी दो अंगुलियाँ खड़ी कर दी। तभी वो बूढ़ी औरत बोली:- "२०० रुपए ठीक है इस पत्थर को मैं तुम से खरीद लूँगी|"

मैं एकदम हैरान हो गई किएक पत्थर की कीमत ₹२०० ! पत्थर तो कहीं पर भी मिल जाते हैं लेकिनउसकी कीमत ₹२०० मैं तुरंत अपने पापा के पास गई और बोला, पापा मुझे बाजार में एक बूढ़ी औरत मिली थी और वह इस पत्थर के ₹२००देने के लिए तैयार थी। पापा ने कहा , इस बार तुम इस पत्थर को संग्रहालय में लेकर जाना और अगर कोई इसकी कीमत पूछे तो कुछ मत कहना बस अपनी दो अँगुली खड़ी कर देना। मैं संग्रहालय में गई और वहाँ पर एक आदमी की नजर मेरे हाथ में रखे पत्थर पर पड़ी और तभी उसने पत्थर की कीमत पूछी मैं एकदम चुप रही और अपनी दो अंगुलियाँ खड़ी कर दी। तभी वो आदमी बोला ₹२०,००० ठीक है मैं तुम्हें इस पत्थर के ₹२०,००० देने को तैयार हूँ। ये पत्थर तुम मुझे दे दो। मैं फिर से चौंक गई और जाकर अपने पापा से कहा, म्यूज़ियम में मुझे एक आदमी मिला था जो कि इस पत्थर के ₹२०,००० देने को तैयार है। तब पापा ने कहा, अब मैं तुम्हें आखरी जगह भेजने जा रहा हूँ और तुम्हें जाना है ।वोजगहहै, 'कीमती पत्थरों की दुकान' और अगर वहाँ पर भी कोई तुमसे इस पत्थर की कीमत पूछे, तो कुछ मत कहना बस अपनी दो अंगुलियाँ खड़ी कर देना। मैं जल्दी से कीमती पत्थरों की दुकान परगईऔरवहाँएक आदमी जो काउंटर के पीछे खड़ा था, मेरे हाथ में उस पत्थर को देखकर जल्दी से काउंटर से निकला औरमेरे हाथों से पत्थरछुड़ा लिया और उसकी कीमत पूछने लगा। मैंने कुछ नहीं कहा। बस अपनी दो अंगुलियाँ खड़ी कर दी।तभी उस इंसान ने कहा २,००,००० रुपये ।ठीक है ! मैं तुम्हें इस पत्थर के ₹२,००,००० देने को तैयार हूँ। मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ कि कोईकहाँ इस पत्थर के ₹२०० दे रहा था और अब यह आदमी इस पत्थर के ₹२,००,००० दे रहा है।मैं दौड़कर अपने पिता के पास गईऔर उन्हें बताया कि कीमती पत्थरों की दुकान पर एक आदमी इस पत्थर के २,००,००० रुपये देने को तैयार हैतभी मेरे पापा ने कहा क्या तुम समझी अपनी जिंदगी की कीमत !

शिक्षा - आपकी जिंदगी की कीमत इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने आप को कहाँ रखते हो। यह फैसलाआपको करना है कि आप को ₹२०० का पत्थर बनना है या फिर ₹२,००,००० का। जिंदगी में कई सारे ऐसे लोग होते हैं जो आप से बहुत प्यार करते हैं, उनके लिए आप बहुत कुछ हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आपको सिर्फ उपयोग करेंगे। उनके लिए आप कुछ भी नहीं हैं। ये आपके ऊपर निर्भर करता है कि आपकी जिंदगीकी कीमत क्या होगी।

मीनाक्षी (नौवी -' स')

सहनशीलता

क्या होती है सहनशीलता?

जो ज़िन्दगी के पड़ावों में सहारा दे,

और सही राह से भटकने से बचाए,

वो अनोखी चीज़ है सहनशीलता।

क्या होता है सहनशीलता का महत्व?

यह वो पंख हैजो पक्षी-रुपी व्यक्ति,

की उड़ान को सफलकर दे।

सपने सब देखते हैं पर,

केवल उन्हीं व्यक्तियों के सपने पूर्ण होते हैं,

जो सपनों से मुकरने का सहारा न लेकर,

सहनशीलता का लेते हैं।

नाम–प्रज्ञा झा

नौवी- स

जो मेरा शिक्षक कहलाता

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
सबसे पहलेहै आता,
जीवन में सदा आदरहै पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथ-प्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

नमन सिंह
छठी ड

कोरोनाकाउत्पात

हाँ ,एक वायरस है आया जिसने है खौफ बनाया।

ऐसा वायरस देखा नहीं मैंने आज तक।

जिसके लिए शील्ड पहननी पड़ती सिर तक |

इसने मचाई ऐसी तबाही, अब क्या करें मेरे भाई?

हाँ, इसनें चाइना में बोलना सीखा, इटली में चलना सीखा, अमेरिका में पढ़ना सीखा।

और जब ये भारत में आया धीरे-धीरे डर बनाया।

हमने ध्यान ना दिया तो उसने फायदा उठाया।

जब ये दिन-ब-दिन बढ़ता गया।

तब हमने इस पर गौर फ़रमाया।

रानी परी की कहानी

रानी परी को किसी ने नहीं देखा था। रानी परी उस गुफा में रहती है जहाँ कभी कोई आता-जाता नहीं था और रानी परी ने अभी तक किसी इंसान को नहीं देखा था। रानी परी के साथ एक और परी थी जिसका नाम इच्छा परी था। इच्छा परी से आप कुछ भी माँगों वह सभी की इच्छाएँ पूरी करती थी। रानी परी जहाँ रहती थी वो गुफा जंगल के बीचों-बीच थी इसलिए वहाँ कोई आता जाता नहीं था। लोग वहाँ आने-जाने से डरते थे इसीलिए आज तक कोई इस गुफा को नहीं देखा था। यह दोनों परियाँ यहाँ कैसे आई, इसका आज तक किसी को नहीं पता । इनके बारे में कोई नहीं जानता है।

एक दिन की बात है। एक जादूगर अपनी जादू की कला का अभ्यास कर रहा था। वोअक्सर उस जंगल में अभ्यास करता था लेकिन एक दिन अभ्यास करते-करते वो जादूगर जंगल के बीच में पहुँच गया। तभी जादूगर की नजर उस गुफा पर पड़ी जिसमें वह दोनों परियाँ रहती थीं। आज तक उस जादूगर ने भी इस गुफा को नहीं देखा था इसलिए वह जादूगर इस गुफा को देखने के लिए अंदर की ओर गया। जब जादूगर अंदर जा रहा था तो गुफा के अंदर बहुत अच्छी चीजों को देख रहा था। वह गुफा अंदर से किसी महल से कम नहीं लग रही थी। जादूगर अंदर चला जा रहा था। उसे कोई नजर नहीं आ रहा था क्योंकि उस वक्त वह दोनों परियाँ वहाँ नहीं थी। जादूगर गुफा में ढूँढने लगा कि यहाँ कौन रहता है और इसके बारे में पता करने लगा। जादूगर गुफा में घूम ही रहा था कि अचानक उसके सामने इच्छा परी आ गई और जादूगर को देखकर इच्छा परी ने पूछा; "तुम - कौन ? और यहाँ पर क्या कर रहे हो? जादूगर इच्छा परी को देखकर हैरान रह गया और उसे देखते ही बोल पड़ा कि मैं तुमसे ही शादी करूँगा और हम दोनों इसी गुफा में रहेंगे।यह बात इच्छा परी को अच्छी नही लगी और उसको गुस्सा आ गया। गुस्से से लाल होकर इच्छा परी ने अपने जादू से उस जादूगर को पकड़ना चाहा लेकिन वह जादूगर भी जादू जानता था इसलिए उसने ऐसा नहीं होने दिया। जादूगर इच्छा परी से ज्यादा शक्तिशाली था। अतः उसने इच्छा परी को पकड़ लिया। उधर रानी परी जंगल में घूम रही थी। जंगल में घूमते घूमते रानी परी की मुलाकात एक राजकुमार से हुई जो रास्ता भटक गया था। तभी राजकुमार की नजर उस रानी परी पर पड़ी। उसके बाद रानी परी और राजकुमार ने बहुत सारी बातें की। उसके बाद रानी परी राजकुमार को अपनी गुफा में ले आई। अंदर आते हुए रानी परी और राजकुमार ने देखा कि इच्छा परी जो पकड़ी जा चुकी थी और एक बंधन में बंधी थी। जादूगर उस वक्त वहाँ पर नहीं था क्योंकि वह गुफा को देखने के लिए दूसरी छोर की तरफ गया हुआ था। इच्छा परी ने रानी परी को सारी आपबीती सुनाई। उसके बाद रानी परी ने इच्छा परी को छुड़ा लिया। रानी परी इच्छा परी और राजकुमार तीनों ने मिलकर एक योजना बनाई कि उस जादूगर को मजा चखाया जाये। उसके बाद सभी लोग उस जादूगर का इंतजार करने लगे। जब जादूगर आया तो देखा कि वहाँ पर इच्छा परी नहीं है। तभी अचानक रानी परी और इच्छा परी ने पीछे से अपना जादू चला कर उस जादूगर को पकड़ लिया।इसके बाद इच्छा परी और रानी परी ने मिलकर अपने जादू से उस जादूगर का सारा जादू खत्म कर दिया और उसको अपना गुलाम बना लिया। अब वह गुलाम उनकी सेवा करता है। इसके बाद राजकुमार और रानी परी ने शादी कर ली और उसी गुफा में रहने लगे क्योंकि रानी परी ने शर्त रखी थी कि वह तभी उस राजकुमार से शादी करेगी जब वह वहीं रहेगा।

नाम : अनामिका यादव

कक्षा : नौवीं ई

नन्हा पौधा

नन्हा पौधा मुस्कुराकर बोला,

एक दिन होऊँगा मैं भी बड़ा,

करूँगा उस जंगल को और भी घना,

वह बोला, एक दिन मैं भी वृक्ष बनूंगा,

घनी छाँव मैं सबकोदूँगा।

हरी-भरी पत्तियाँ लदेंगी मुझपर,

रंग- बिरंगे फूलों से सजूंगा मैं,

और स्वादिष्ट रसीले फलों को,

बाटूँगा सभी जीवों को मैं।

बनूगाँ सभी पक्षियों का बसेरा मैं,

हरा-भरा होकर लहराऊँगा मैं

और अपनी स्वच्छ हवा से,

पूरे जग कोमहकाऊँगा मैं।

नन्हा पौधा मुस्कुराकर बोला,

एक दिन होऊँगा मैं भी बड़ा,

करूँगा इस जंगल को और भी घना।

दीपकसतावन

९-एफ

पर्यावरण

पर्यावरण को बचाना हमारा ध्येय हो,
सबके पास इसके लिए समय हो।
पर्यावरण अगर नहीं रहेगा सुरक्षित,
हो जायेगा सब कुछ दूषित।

भले ही आप पेड़ लगाएं एक,
पूरी तरह करें उसकी देखरेख।
सौर ऊर्जा का करें सब उपयोग,
कम करें ताप विद्युत का उपभोग।
रासायनिक खाद का कम करें छिड़काव,
भूमि को प्रदूषित होने से बचाव।

कचरे का समुचित रीति से करो निपटारा,

बंद होगा तभी बीमारियों का पिटारा।
फैक्ट्रियों में जब सौर यन्त्र लगाई जाएगी,
वायु प्रदुषण में अपने आप कमी आएगी।
तब जाकर पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी,
आधी बीमारियाँ अपने आपही चली जायेंगी।

नाम – इशिता
कक्षा –आठवीं'ई'

नदी

मैं नदी हूँ
हिमालय की गोद से बहती हूँ
तोड़कर पहाड़ों को अपने साहस से
सरल भाव से बहती हूँ।

लेकर चलती हूँ मैं सबको साथ
चाहे कंकड़ हो चाहे झाड़
बंजर को भी उपजाऊ बना दूँ
ऐसी हूँ मैं नदी।

बिछड़ों को मैं मिलाती
प्यासे की प्यास मैं बुझाती
कल-कल करके मैं बहती
सुर ताल लगाकर संगीत बजाती।

कहीं पर गहरी तो कहीं पर उथली हो जाती
ना कोई रोक पाया, ना कोई टोक पाया
मैं तो अपने मन से अविरल बहती
मैं नदी हूँ।

सब सहती चाहे आँधी हो या तूफान
चाहे शीत और चाहे गर्मी
कभी ना रूकती, कभी ना थकती
मैं नदी सारे जहां में बहती।

नाम – इशिता

कक्षा –आठवीं'ई'

कोशिश तो अंतिम
क्षण तक करनी चाहिए

सफलता मिले
या तजुर्बा

दोनों ही चीजें नायाब हैं...

~ अनुष्का

हिंदी साहित्य के रचनाकार

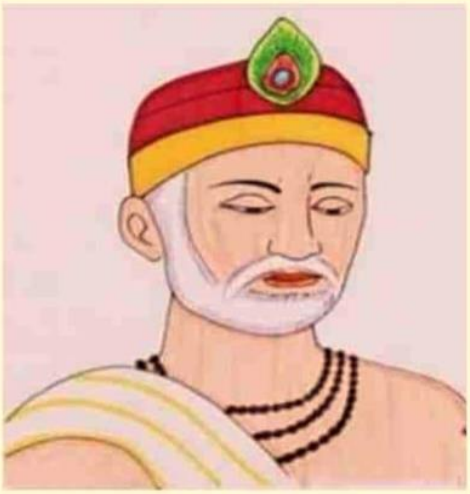

मातांगिनी हाज़रा

भूगोल में जो सदा अमर रहेंगे,

इस देश के वह वीर रहेंगे,

जो सह न सके भारतमाता की चीख

उसे स्वतंत्र करने को लगे रहे वो वीर

शहादत दे दी वीर और वीरान्गनाओं ने

तभी जी रहे हम इन ठंडी हवाओं में

याद करो उन्हें सलाम करो उन्हें

भूल न जाना इन्हें।

अगर कोईउनका अंतिम उच्चारण सुन सकता था , तो वह था"वंदे मातरम"ये शब्द 72 साल की एक वीरांगना के थे जिन्होंने अपने स्थिर हाथों में भारतीय तिरंगा झंडा थामा हुआ था। यह कहानी मातांगिनी हाज़रा जीकी है जिनका जन्म 19 अक्टूबर 1870 को पश्चिम बंगाल . के लोगला के पास एक किसान के परिवार में हुआ था। उनका 12 साल की उम्र में ही विवाह हो गया थाऔर जैसे ही उनका वैवाहिक जीवन अपनी यात्रा पर था , यह अचानक अपने चरम पर पहुँच गया। और वह 18 साल की उम्र में ही विधवा हो गईं। ऐसा कहा जाता है कि " जहाँ चाह वहाँ राह " और जल्द ही उन्होंने सामाजिक कार्यों में समय देना शुरू कर दिया। उन्होंने स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी के शिक्षाओं की अत्यधिक प्रशंसा की और उनका अनुसरण किया और कह लाईं " गाँधी बूढ़ी"।

गुरु तेग बहादुर

"हिंद की चादर" कहो या कहो त्याग बल

जिसके कारण बचा रहा हिंदुओं का कल

संत स्वभाव योद्धा बहादुर

ऐसे थे कुछ गुरु तेग बहादुर

वहीं दूसरी और था मुगल राजा

धर्म परिवर्तन की देता सजा

मौत चुनो या चुनो इस्लाम

कश्मीरी ब्राह्मणों की खातिर

फिर वह देने चले बलिदान

बनकर नौवें गुरु सिखों के संभाले गुरु गद्दी

करते हैं रक्षा हिंदुओं की बन गए वह बंदी

कहा जो कर सकोगे मेरा धर्म परिवर्तन कर देना इनका भी

अब चाहे करना पड़े सर कलम

शायद दूर हो जाए भ्रम तुम्हारे मन का भी

और कर बाजार चांदनी चौक के पास

जगाए रखी हिंदुओं में कुछ आस

मुस्कान भारती

कक्षा- बारहवीं अ

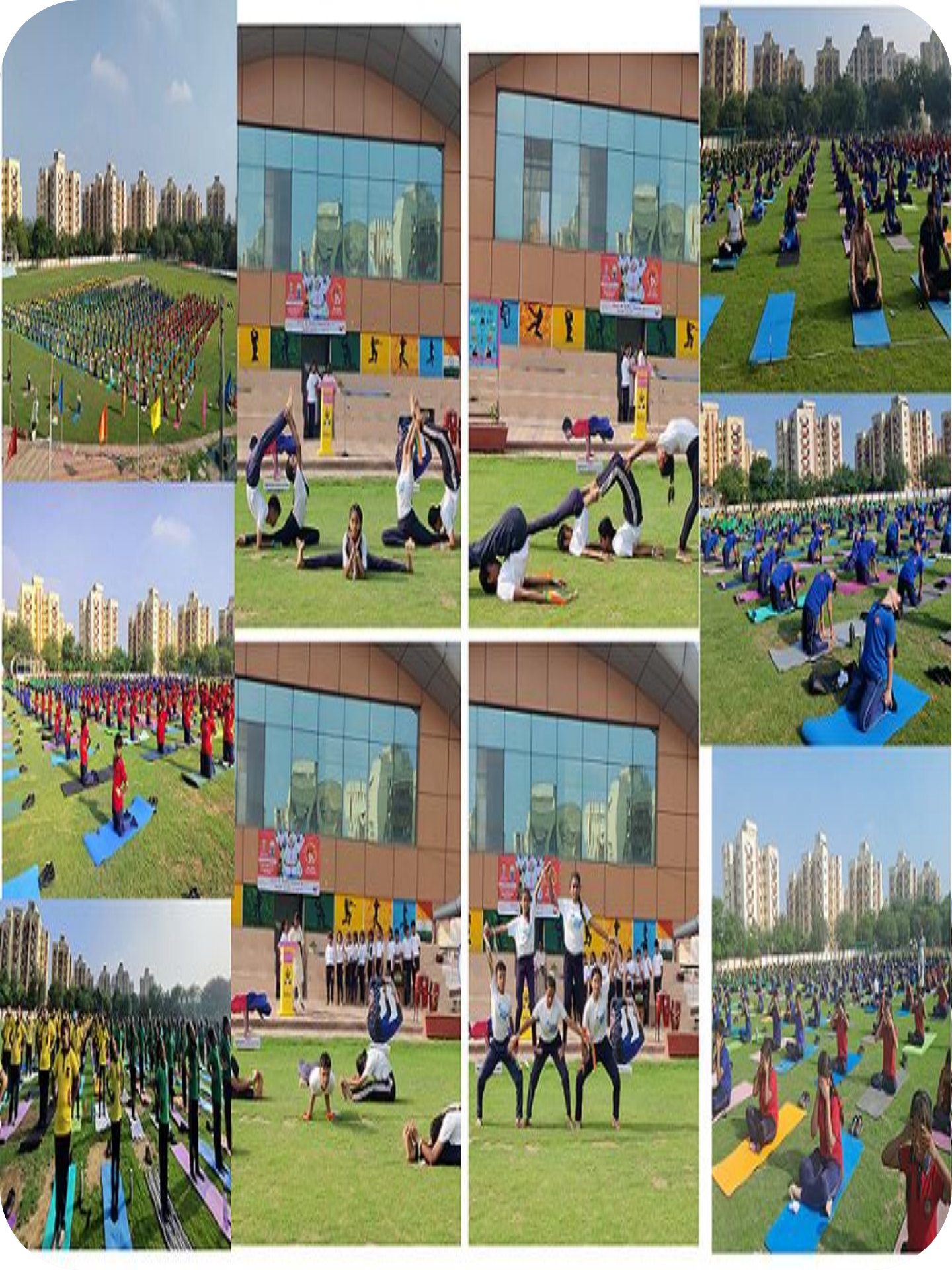

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO-1 DELHI CANTT -10

HOUSE CAPTAIN
HOUSE CAPTAIN
HOUSE CAPTAIN
HOUSE CAPTAIN

प्रधान मंत्री श्री केन्द्रीय विद्यालय संगठन
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 दिल्ली छावनी
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO-1 DELHI CANTT
SUMMER CAMP

STALL
CLASS I.D.E.F
₹5 only
₹5 only

PM SHRI K V NO1 DELHI CANTT
"बालमेला"
HAPPY
CHILDREN'S
DAY

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
PM SHRI
PM SHRI KV NO 1 DC
DIAMOND JUBILEE CELEBRATION
60th KVS FOUNDATION DAY

DANCE DON'T
NEED WI
TO